चतुर्थ अध्याय

कमलेश्वर के लघु-उपन्यासों का सामान्य परिचय

एक सड़क सत्तावन गलियाँ

डाक बंगला

लौटे हुए मुसाफ़िर

तीसरा आदमी

समुद्र में खोया हुआ आदमी

आगामी अतीत

2497 H

कमलेश्वर के लघु-उपन्यासों का सामान्य परिचय

कमलेश्वरजी अपनी कहानियों एवं लघु-उपन्यासों के ज़रिये युग-सत्य और युग-बोध को उद्घाटित करनेवाले एक सशक्त साहित्यकार हैं। उनका जीवन के प्रति प्रगतिशील दृष्टिकोण है। वे एक घोषित प्रगतिशील कथाकार हैं। उनके लघु-उपन्यासों में यथार्थवाद का सफल अंकन हुआ है। वे कभी किसी सिध्दान्त के झमेलेमें पडते नहीं हैं। वे सामाजिक जीवन के यथार्थ को अभिव्यक्ति देते रहे हैं। कमलेश्वरजी हमेशा युगीन समस्या के बारे में सोचते रहते हैं। उनके सभी लघु-उपन्यासों में यही चिंतन मुखर हो उठा है। उन्होंने अपने लघु-उपन्यासों में जीवन के यथार्थ को बिलकुल स्वाभाविक और प्रभावशाली

ढंगसे प्रस्तुत किया है। आधुनिक संचेतना को वहन करने में वे सक्षम हैं। अुन्होंने अभीतक छः लघु-अुपन्यास लिखे हैं। अिनका अपना महत्व भी अुनकी विशेषताअें रही हैं। अुनका हर लघु-अुपन्यास पहले से बिलकुल अलग बन पड़ा है। अुनके कुछ अैसे भी लघु-अुपन्यास हैं, जिन पर सफल फ़िल्में भी बन चुकी हैं। अुनके प्रमुख लघु-अुपन्यास निम्नांकित हैं -

१. अेक सड़क सतावन गलियाँ - १९६१
२. डाक बंगला - १९६२
३. लौटे हुअे मुसाफ़िर - १९६२
४. तीसरा आदमी - १९६४
५. समुद्र में खोया हुआ आदमी - १९६५
६. आगामी अतीत - १९७६

(१) अेक सड़क सत्तावन गलियाँ

यह कमलेश्वरजी का सबसे पहला लघु-अुपन्यास है। यही अुपन्यास सन १९५७ में 'हंस' नामक पत्रिका में जल्द ही प्रकाशित हुआ। अिस लघु-अुपन्यास के सिर्फ़ अेक सौ पच्चीस पन्ने हैं, फिरभी अिसने कमलेश्वरजी को अुपन्यासकार की पंक्ति में बिठा दिया। अिस लघु-अुपन्यास की कहानी कमलेश्वरजी के जन्म ग्राम से जुडी हुअी है। अिस लघु-अुपन्यास का नायक है - सरनामसिंह। अिसके बाकी पात्र हैं शिवराज, रंगीले, बंसी, हेम और कमला। सरनाम और बंसी का चरित्र चित्रण विशेष प्रभावशाली बन पडा है। वास्तव में यह लघु-अुपन्यास आज़ादी के पूर्व लिखा गया और अुसको आज़ादी के बाद पूर्णत्व प्राप्त हुआ। अिसमें मध्यमवर्गीय आर्थिक, सामाजिक अेवं वैयक्तिक जीवन के सजीव चित्र पाये जाते हैं। टूटते जाने की प्रक्रिया का अंकन अिस अुपन्यास में पाया जाता है।

यह अेक सामाजिक लघु-अुपन्यास है। और अिसमें युगीन सत्यों को प्रभावशाली ढंगसे प्रस्तुत किया गया है। यही लघु-अुपन्यास बाद में प्रकाशक की भूल की वजह से 'बदनाम बस्ती' के नाम से प्रकाशित हुआ था। दरअसल लघु-अुपन्यास कार के रूप में अुनका यह पहला प्रयास है। मगर अुनकी यश कोशिश अितनी कामयाब हुअी कि कमलेश्वरजी को लघु-अुपन्यासकार के रिश्ते खूब ख्याति प्राप्त हुअी। आज भी जब हम यह लघु-अुपन्यास पढ़ने लगते हैं, तब अैसा नहीं लगता कि यह बरसों पहले लिखा गया था।

'अेक सड़क सत्तावन गलियाँ' की अेक बड़ी खासियत यह भी है कि यह आकार में छोटा होने के बावजूद भी विस्तार में काफी बड़ा लगता है। अिसमें गहराअी ज्यादा है। अिसकी दूसरी अेक और खासियत है कि अिसमें तमाम सारे पात्र पाये जाते हैं और अुनके बारे में सच्ची जानकारी दी गअी है। कमलेश्वरजीकी प्रखर प्रतिभा का परिचय अिस लघु-अुपन्यास से हो जाता है। कस्बे की ज़िन्दगी का ज़ीता-जागता चित्रांकन अुन्होंने अिस लघु-अुपन्यास में कर दिया है।

सरनामसिंह, रंगीले, शिवराज, बाजामास्टर, बंसरी और कमला अिसके प्रमुख पात्र हैं। ये सभी पात्र अपने अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाले पात्र हैं। अिसमें अनेक मौलिक विचार पेश किये गये हैं। अितना ही नहीं कोमल और कठोर भावों की सशक्त अभिव्यक्ति भी अिसमें देखने को मिल जाती है। आदमी की अच्छाअियाँ, बुराअियाँ, ज़ज्बात, नफ़रत आदि भावों को भी अिस लघु-अुपन्यास में सशक्त अभिव्यक्ति मिली है। कमलेश्वरजी ने 'अेक सडक सत्तावन गलियाँ' में जिस परिवेश का चित्रण किया है, वह वास्तव में मैनपुरी कस्बे का ही परिवेश है। यही है वह मैनपुरी कस्बा जहाँ पर कमलेश्वरजी का जन्म हुआ

है। अिस लघु-अुपन्यास की कथावस्तु आज़ादी के पहले के भारत से लेकर आज़ादी के बाद के भारत तक फैली हुअी है।

..... 'अेक सड़क सत्तावन गलियाँ' में निम्न मध्यमवर्ग समाज के आर्थिक - सामाजिक - राजनितिक तथा वैयक्तिक जीवन का यथार्थ चित्रण किया गया है।''१

..... ''कमलेश्वरने अपने अिस प्रथम सामाजिक लघु-अुपन्यास में स्वातंत्र्योत्तर अेवं पूर्व काल के युग को अत्यन्त सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत किया है। हरिजन आन्दोलन, कम्यूनिस्ट कांग्रेस विवाद, साम्प्रदायिक तनाव, अखबारबाजी, किराअे के नेता और अुनके नारों के बीच शिवराज, हेम, कमला, बाजामास्टर, हफ़ीज साहब और निर्मोही जैसे व्यक्तित्वों के टूटने की आवाज साफ नहीं आती है। लेकिन कुल मिलाकर टूटे हुअे बिखराव से अेक सम्पूर्ण चित्र अुभरकर पाठक के सामने आता है जो 'अेक सड़क सत्तावन गलियाँ' का प्रभावपूर्ण अंकन है।''२

..... '' 'अेक सड़क सत्तावन गलियाँ' निम्न-मध्यमवर्गीय समाज के आर्थिक सामाजिक अेवं वैयक्तिक जीवन का सजीव चित्र है। लेखकने अपने प्रगाढ़ अनुभव और संवेदनाजन्य अनुभूतियों के आधारपर अिसकी कथा लिखी है। यद्यपि यह कथा कृति अुत्तर प्रदेश के मैनपुरी कस्बे की कथा है, किन्तु अिसमें आंचलिकता अथवा लोकल कलर जैसी कोअी अनुभूति नहीं है। अैसा न होना अिस लघु-अुपन्यास की कमी नहीं विशेषता है।''३

ड़ाक बंगला

कमलेश्वरजी का अेक और श्रेष्ठ लघु-अुपन्यास है - 'ड़ाक बंगला'।

SHIVAJI UNIVERSITY * KOLHAPUR LIBRARY

अुन्होंने 'अिरा' नामकी अेक येवती की ट्रैजडी को पाठकों के सामने अुजागर करके रख दिया है। 'अिरा' वास्तव में वह बदनसीब युवती है जिसको कभी सच्चा प्यार मिला ही नहीं, जिसकी अुसे तलाश थी। अुसकी ज़िन्दगी में जो भी आया, अुसने अुसके साथ खिलवाड़ ही किया। अुनमें से कोअी भी अेक अुसको अपना अंतिम प्यार नहीं दे पाया।

कमलेश्वरजी ने 'अिरा' को दार्शनिक लहजे में अिस लघु-अुपन्यास में पेश किया है। अुसके कथोपकथनों से यह बात भली भाँति स्पष्ट हो जाती है। 'अिरा' तिलक को अपनी दर्द भरी दास्तान कश्मीर में सुनाती है। और अुसी दास्तान को लेखक यहाँ प्रस्तुत करता है। वास्तव में कश्मीर यात्रा के दौरान 'अिरा' और तिलक की मुलाक़ात हो जाती है। वैसे 'अिरा' अिस सम्पूर्ण लघु-अुपन्यास पर छायी हुअी है। सारी कहानी अुसी के अिर्द-गिर्द घूमती हुअी नजर आती है। तिलक, मेजर सोलंकी, बसरा, विमल और डाक्टर आदि 'ड़ाक बंगला' के प्रमुख पात्र हैं। अिस लघु-अुपन्यास में हर अेक पात्र की अपनी अपनी विशेषताअें अुभरकर सामने आती हैं। वैसे 'ड़ाक बंगला' का प्रमुख पात्र 'अिरा' ही है।

..... ''कमलेश्वर ने 'ड़ाक बंगला' अुपन्यास में जीवन के यथार्थ का जो चित्र प्रस्तुत किया है वह अन्य अुपन्यासों से कअी अर्थों और स्तरों पर भिन्न है। अुनके प्रायः सभी अुपन्यासों में निम्न मध्यमवर्ग का बिखराव और टूटन आर्थिक विषमताओं से सम्बध्द है, परन्तु 'ड़ाक बंगला' में आर्थिक समस्या दूसरी समस्याओं का आधार लेकर अुद्घाटित हुअी है। अिसके माध्यम से नारी-जीवन की असहाय और दयनीय परिस्थितियों को चित्रित किया गया है। तथा सांकेतिक पध्दति से ''सुरक्षा की कामना'' का आर्थिक पक्ष स्पष्ट हुआ है.....अिरा की स्थिति का सम्बन्ध जटिल और संकुल

सामाजिक व्यवस्था से जुडा हुआ है। अुसके साथ ही अुसके जीने का संघर्ष भी है, जो अुपन्यास के प्रारम्भ से अन्त तक चलता रहता है। यह संघर्ष व्यवस्थाओं और विधानों के प्रति मानवीय संघर्ष की क्रान्तिकारी कामना का अंश कहा जा सकता है।''[४]

''..... साथ ही मुझे लगता है कि कमलेश्वर ने यह अुपन्यास अेक अजीब-सी समानियत के वशीभूत होकर लिखा है, फलस्वरूप शिरा जैसी नारी का जीवन-संघर्ष अपने पूरे प्रभाव के साथ सामने नहीं आ पाता और हम अिस अुपन्यास के कुछेक अच्छे विवरणों, चित्रणों - और काव्यात्मक या सूत्रात्मक वाक्यों में अुलझकर रह जाते हैं। यह भी हो सकता है कि कमलेश्वर ने यह अुपन्यास अेक दूसरे प्रकार की भाषा शैली में अपने आपको आज़माने के लिअे लिखा हो और बाद में अुन्हें स्वयं ही लगा हो कि वे अिस भाषा शैली के लिअे नहीं बने हैं। प्रमाण के रूप में मैं कहूँगा कि डाक बंगला के बाद कमलेश्वर ने अपना कोअी भी अुपन्यास अिस प्रकार की किताबी और रूमानी भाषा में नहीं लिखा''।[५]

वास्तव में कमलेश्वरजी का यह दूसरा श्रेष्ठ लघु-अुपन्यास है अिसका प्रकाशन सन १९६२ मे हुआ। अिस लघु-अुपन्यास की कहानी शिरा नामकी युवती से जुडी हुअी है। अिस शिरा ने अपने जीवन में चार व्यक्तियों से प्रेम किया है - विमल, बतरा, सोलंकी और डॉक्टर। अिस लघु-अुपन्यास का फ़ोकस शिरा पर ही रहा है। कमलेश्वरजी ने शिरा को विशेष दार्शनिकता के साथ प्रस्तुत किया है। अुसका चरित्र चित्रण अति प्रभावशाली बन पडा है। शिरा का हर वाक्य जैसे सूक्तवाक्य जान पड़ता है। ''अपनी आपबीती सुनाते समय वह तिलकके सामने सौंदर्य, पुरुष, समाज और जीवन के संबंध में अैसे कअी वाक्य बोल जाती है, जो जीवन के गहन अनुभव के बाद ही कहे

जा सकते हैं। लेकिन अुसकी विशेषता यह रही है कि हर बार नये ढंग से जीवन के क्षेत्र में मुस्कराती हुअी प्रविष्ठ हुअी है। जीवन से जूझते हुअे चरित्रों के रूप में कमलेश्वर की अिरा शायद सबमें सशक्त है।''६

'कमलेश्वर ने डाक बंगला अुपन्यास में जीवन के यथार्थ का जो चित्र प्रस्तुत किया है वह अन्य अुपन्यासों से कअी अर्थों और स्तरों पर भिन्न है। अुनके प्रायः सभी अुपन्यासों मे निम्न मध्यमवर्ग का बिखराव और टूटन, आर्थिक विषमताओं से सम्बध्द है, परन्तु डाकबंगला में आर्थिक समस्या दूसरी समस्याओं का आधार लेकर अुद्घाटित हुअी है। अिसके माध्यम से नारी जीवन की असहाय और दयनीय परिस्थितियों को चित्रित किया गया है तथा सांकेतिक पध्दति से ''सुरसा की कामना'' का आर्थिक पक्ष स्पष्ट हुआ है।''८

लौटे हुअे मुसाफ़िर

कमलेश्वरजी का अेक और श्रेष्ठ लघु-अुपन्यास है जिसका प्रकाशन सन १९६३ में हुआ। हिन्दुस्तान की आज़ादी और अुसके बँटवारे के प्रभाव को कमलेश्वर ने 'लौटे हुअे मुसाफ़िर' की कहानी बनाया है।

''लौटे हुअे मुसाफिर' में आस्था, आत्मविश्वास, कर्तव्यपरायण देशानुराग अेवं दायित्व निर्वाह का जो अुन्होंने महान संदेश दिया है, वह आज के परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। भटके हुअे मुसाफ़िर में फ़िर कुछ लौटकर आ गये है यह बात असंभव तो नहीं लेकिन आज के लिअे कठिन अवश्य है। कमलेश्वर की सूक्ष्म अनुभूति तथा संवेदनाजन्य प्रेषणीयता के कारण यह लघु अुपन्यास काफ़ी सफ़ल बन पड़ा है।''९

कमलेश्वर जी का यह लघु-उपन्यास भारत-पाक विभाजन को लेकर लिखा गया है। आज़ादी की लड़ाई और विभाजन के असर को इस लघु-उपन्यास में रेखांकित किया गया है। हिन्दुस्तान का विभाजन हुआ और लोगों के दिलों में दूरियाँ पैदा होती गईं। हिन्दुस्तानी लोगों की गद्दारियाँ और कुर्बानियों का चित्रण इसमें किया गया है। रतन और मक्सूद ये गद्दारी करते हैं, तो सलमा, सत्तार, बच्चन और नसरिन कुर्बानियाँ दे देते है। कमलेश्वर जीने भारत-पाक विभाजन की गहरी संवेदना को 'लौटे हुये मुसाफ़िर' में प्रस्तुत किया है।

'लौटे हुये मुसाफिर' में कस्बाती ज़िन्दगी का ही जीता-जागता चित्रांकण हुआ है। इसको काफ़ी सफ़लता भी प्राप्त हुई है। यह कहानी सिर्फ इस लघु उपन्यास के पात्रों तक ही सीमित न होकर, वह सम्पूर्ण समूह की पीडाओं अथवा यातनाओं को प्रस्तुत करनेवाली कहानी है। 'लौटे हुये मुसाफ़िर' की पृष्ठभूमि भारत का विभाजन ही है।

..... ''लौटे हुये मुसाफ़िर के रूप में स्वतंत्रता के बाद जन्मी या बाद्रोश हुयी पीढ़ी में से कुछ ने अपने-अपने ठिकाने खोज लिये है और अधिकांश भटक गये हैं। यह भटकन नयी पीढ़ी को उसकी विरासत में मिली है। कहानी का अन्त लेखकने आदर्शवादी ढंग से किया हैं।''[९]

..... ''वस्तुतः कमलेश्वर ने 'लौटे हुये मुसाफ़िर' में उन अबोध लोगों की कथा को आधार बनायाँ है जो केवल अपनी रोज़ी रोटी के लिये ही संघर्षरत थे, परन्तु साम्प्रदायिकता की लहर में बह गये और न तो पाकिस्तान जा सके, न ही वापस अपने कस्बे में लौट सके। अंत में जो लोग लौटकर आये, वे मजदूर बनकर ही आये।''[१०]

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

....."'लौटे हुअे मुसाफ़िर' अुपन्यास में पाकिस्तान बनने पर अेक छोटे से कस्बे के मुसलमानों को किस प्रकार अपनी बस्ती छोड़कर भटकना पड़ता है और वर्षों के अंतराल के बाद अुन लोगों के बच्चे जवान होकर फिर अपने कस्बे में पहुँचकर खण्डहरों को पहचानने का किस प्रकार प्रयास करते हैं, यह विषय कमलेश्वर ने चुना है। भारत की स्वाधीनता से अुन्हें क्या मिला, यह अेक प्रश्न है जिसे कमलेश्वर ने अुठाया है। जिस संवेदनशील और आत्मीयता-पूर्ण ढंग से अुन लोगों की ज़िन्दगी का चित्रण कमलेश्वर ने किया है, वह वस्तु के प्रति विश्वसनीय दृष्टि का परिणाम है।"[११] ....

तीसरा आदमी

'तीसरा आदमी' कमलेश्वरजी का बेहद चर्चित लघु-अुपन्यास है। यह लघु-अुपन्यास प्रेम त्रिकोण को लेकर लिखा गया है। वास्तव में अेक ज्वलन्त समस्या को लेकर ही यह लघु-अुपन्या लिखा गया है। वह समस्या यह है कि जब स्त्री-पुरुष या पति-पत्नि के बीच तीसरा आदमी आता है, तो बनते बनते रिश्ते कैसे बिगड़ जाते हैं या शक की दीवार खड़ी होकर आपसी रिश्तों को कैसी तोड़ देती है। 'तीसरा आदमी' में अेक तीसरी छाया मंड़राती हुअी दिखाअी देती है। धीरे धीरे अुपन्यास का प्रमुख पात्र 'मैं' के दिल में शक बढ़ने लगता है। मानसिक संघर्ष की टकराहट अिसमें दिखाअी गअी है। वैसे 'तीसरा आदमी' मे रोमांटिक वातावरण का चित्रण कमलेश्वरजी ने बड़ीबखूबी के साथ किया है। सम्पूर्ण अुपन्यास में शक की अेक आँधी-सी दिखाअी देती है। जिससे आपसी रिश्तों में दूरियाँ पैदा हो जाती हैं। मैं, चित्रा और सुमन्त, हर पात्र अपनी अपनी विशेषताअें लेकर पाठकों के सामने आ जाता है। मैं और चित्रा - दोनों पति-पत्नि हैं, मगर अिन दोनों के बीच में का दूर दराज का माअी सुमन्त आ जाता है। अुसके आ जाने से मैं का शक पक्का हो जाता है।

वैसे यह लघु अुपन्यास काफ़ी दिलचस्प बन पड़ा है। अिसकी कथावस्तु सीधे ढंग से विकसित होकर अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचती है। सचमुच कमलेश्वरजी का 'तीसरा आदमी' पाठकों पर अपना अमिट प्रभाव छोड जाता है।

"..... 'तीसरा आदमी' नाम का अुपन्यास बिलकुल सीधी सादी अत्यन्त सहज शैली में लिखा हुआ अुपन्यास है। जिसमें सिवाय अुसके अंतिम अंश के बीच में कहीं भी नहीं लगता कि लेखक ने किसी बनावट या बुनावट का सहारा लिया है। पुनः अिस अुपन्यास की दूसरी बड़ी विशेषता यह है पति-पत्नि के बीच किसी 'तीसरे आदमी' के आते की प्रचलित कहानी को लेखक ने अेक अैसा सामाजिक और आर्थिक आयाम प्रदान किया है जिससे यह कहानी मात्र कहानी नहीं रह जाती, वह मध्यमवर्गीय दाम्पत्य की अूँच-नीच का अेक प्रामाणिक दस्तावेज बन जाती है।.....पढ़ने के बाद, मैं निस्संकोच भाव से कह सकता हूँ कि वह मुझे अेक सफ़ल अुपन्यास प्रतीत हुआ और काफ़ी अंशों में पसन्द भी आया। बस तकनीक के आधार पर मुझे अेक कमी यह अवश्य लगी कि वह गठन की दृष्टिसे अेक 'लम्बी कहानी' के अधिक निकट है, लघु अुपन्यास से कम। और दूसरी कमी मुझे यह महसूस हुअी जिसका जिक्र मैं अूपर कर चुका हूँ अर्थात अुपन्यास के अन्त में सुमन्त की आत्महत्या मुझे थोड़ी गठी हुअी और बनावटी लगती है। अिस अंत को पढने पर अैसा लगता है कि लेखक अिस प्रकार का अंत, अुपन्यास शुरू करने से पहले ही तय कर चुका था और वह अुससे आगे जाने का साहस जुटा नहीं पाया।"[१२]

"..... 'तीसरा आदमी' अुपन्यास में जीवन का यथार्थ वर्तमान आर्थिक व सामाजिक परिस्थितियों के आधार पर मध्यमवर्गीय व्यक्ति-चेतना के परिवर्तित रूप को अुद्घाटित करता है। कमलेश्वर ने अिस अुपन्यास में छोटी छोटी स्थितियों के द्वारा मध्यमवर्गीय जीवन की विषमताओं को

सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की है। ......''१३

दरअसल यह कमलेश्वरजी का लिखा हुआ चौथा लघु-उपन्यास है जिसका प्रकाशन सन १९६४ में हुआ। जबसे इस दुनिया की पैदाइश हुई है, स्त्री और पुरुष के बीच हमेशा तीसरा आदमी आता रहा है। जिससे उनके बनते बनते संबंध बिगड़ जाते हैं। उनकी ज़िन्दगी में शक का एक ऐसा तूफान आजाता है, जिससे सारी ज़िन्दगी तहस-नहस हो जाती है। इसकी जीती-जागती मिसाल है, कमलेश्वरजी का 'तीसरा आदमी'। इस लघु उपन्यास की कहानी में, चित्रा और सुमंत इन तीन पात्रों से जुडी हुई है। ''स्त्री पुरुष या पति-पत्नि के सम्बन्ध इतने कोमल आधार पर स्थिर होते है कि वे अपने बीच किसी प्रकार का अन्तर सह नहीं पाते। कभी भूलसे भी यदि इन दोनों के बीच किसी तीसरेने प्रवेश किया तो जीवन तल्ख हो जाता है। व्यक्ति जीवन की इसी उलझन को कमलेश्वरजी ने प्रस्तुत किया है। 'तीसरा आदमी' के रूप में लेखक का यह लघु-उपन्यास वर्तमान आर्थिक और सामाजिक परिस्थितीयों के आधार पर मध्यमवर्गीय व्यक्तिचेतना के बदलते हुए स्वरूप का एक चित्र है।''१४

'तीसरा आदमी' पति-पत्नी के सम्बन्धों को लेकर लिखा गया एक सफ़ल उपन्यास है। पूरे लघु-उपन्यास में शक की छाया मंडराती हुई नजर आती है। पति-पत्नी की घूटती और अन्तमें टूटकर जाती हुई ज़िन्दगी का चित्रण इस उपन्यास में देखने को मिल जाता है।

......''अपनी सांकेतिक अभिव्यक्ति एवं आत्मकथात्मक शैली में लिखा 'तीसरा आदमी' लेखक की औपन्यासिक यात्रा को कस्बाई और महानगरीय सभ्यता की एक जुड़ती हुई कड़ी के रूप में प्रकट करता है। दिल्ली

के विशाल तथा बहुरंगी आकाश के नीचे अत्यन्त लघु जीवन जिये जाने की आशा में टूटते-बिखरते नये सामाजिक मूल्यों की जिस प्रक्रिया को कमलेश्वर ने पकडनेका प्रयत्न किया है, वह निश्चय ही सुन्दर है।"[१५] .....

समुद्र में खोया हुआ आदमी

कमलेश्वरजी का लिखा हुआ यह पाँचवा सफ़ल लघु-अुपन्यास है। जिसका प्रकाशन १९६९ में हुआ। "समुद्र में खोया हुआ आदमी" निम्न मध्यमवर्ग की कहानी है। वह वर्ग जो संस्कार से मध्यमवर्गीय है, पर आर्थिक दृष्टिसे निम्न वर्ग में शामिल होता जा रहा है। वास्तव में यह टूटते जाने की प्रक्रिया का अंकन है। यथार्थ की दृष्टिसे कमलेश्वरजी का यह अेक सफ़ल लघु-अुपन्यास है। अिसकी दुनिया हमारे बीच की है यानी अुन लोगों की जो हमारे चारों तरफ हैं या अेकद हम ही हैं। अिस अुपन्यास की दुनिया में साँस लेनेवाले लोग अैसे हैं, जिन्हें बहुत आसानी से देखा और पहचाना जा सकता है। अिसके प्रमुख पात्र हैं श्यामलाल। अिनसे जुडे हुअे अन्य पात्र है, बीरेन, रम्मी, तारा, हरबंस, समीरा, नमिता आदि। आर्थिक रूपसे जर्जर परिवार के लिअे नया भविष्य खोजते हुअे श्यामलाल दिल्ली पहुँचते हैं - अेक ट्रांसपोर्ट कम्पनी में क्लर्क के रूप में क्योंकि अुन्हें भरोसा है कि अेक दिन शायद वे अुस कम्पनी के मैनेजर बन जायेंगे, पर यह होता नहीं और कम्पनी की नौकरी खो बैठते हैं। अिस दुर्घटना के बाद ही अुपन्यास की शुरुआत होती है।"[१६]

"यह अुपन्यास नये पुराने की समान्तर यात्रा का दिग्दर्शन कराता है। अेक कोणसे यह अुन युवक-युवतियों की व्यथा है जिनके कंधों पर कलह का भविष्य टिका हुआ है। तथा जिनकी ओर अुनके घरवाले टकटकी बाँधे देख रहे हैं क्योंकि स्वतंत्रता के बाद मध्यमवर्ग की हालत और बदली हुअी है और वह

अच्छे दिनों की लम्बी प्रतीक्षा से अब ऊब कर हताश हो चुका है।"[१७]

मध्यमवर्गीय परिवार की टूटते जाने की प्रक्रिया का चित्रांकन अिस लघु-अुपन्यास में किया गया है। वैसे तो यह मध्यमवर्गीय परिवार की दर्दभरी दास्तान ही है। कमलेश्वरजी की औपन्यासिक यात्रा में अिसका अपना विशेष महत्व रहा है। अिसमें तमाम सारे पात्र पाये जाते हैं। अिनकी मजबूरियों का ज़ीता-ज़ागता चित्रण भी अिसमें किया गया है। श्यामलाल, बीरन, तारा और समीरा की मजबूरियाँ पाठकों को द्रवित करती हैं। 'बीरन' सचमुच समुद्र में खो जाता है। अुसके खो जाने से बहुतसे सपने, बहुतसे अरमान, बहुतसी आशाअें खंडित हो जाती हैं।

अिस लघु-अुपन्यास में जीवन संघर्ष का अत्यन्त मार्मिक चित्रण हुआ है। श्यामलाल के परिवार का प्रत्येक सदस्य अपने अपने ढंग से अिस संघर्ष के अखाड़े में अुतर जाता है। 'थोडे में ही खुशियाँ' हर सदस्य मानता चलता है। वास्तव में कमलेश्वरजी का यह रचनात्मक दृष्टिसे अेक महान 'लघु-अुपन्यास' हैं। 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' वास्तविकता का ही चित्रण किया गया है। वैसे यह अेक प्रतीकात्मक लघु-अुपन्यास है।

....."'समुद्र में खोया हुआ आदमी' अेक शहर में निम्न मध्यमवर्गीय परिवार के विघटन की कथा है। यह कथा अुस घुटते, परेशान होते और टूटकर बिखरते परिवार का चित्र प्रस्तुत करते और अुसके माध्यम से वर्तमान समाज में बदलते हुअे व्यक्तिगत, पारिवारिक तथा सामाजिक संबंधोंको प्रत्यक्ष रूप में रखने का प्रयास करती है, आज का मध्यमवर्गीय व्यक्ति किस प्रकार अपनी अर्थवत्ता खोकर आधुनिक सभ्यता की भीड़ के अेक महत्वहीन अंश में रूपांतरित होता जा रहा है।"[१९]

.....''समुद्र में खोया हुआ आदमी' में कमलेश्वर ने नारी को 'सतीत्व' और 'देवित्व' की सीमा से निकालकर उसे इन्सान के रूप में देखने - समझने का प्रयत्न किया है। यही कारण है कि हरबंस तारा को स्वीकार लेता है। विवाह पूर्व यौन-संबंध स्थापित करनेवाला प्रेमी हरबंस समाज के भय से तारा को छोड़कर भाग नहीं जाता। नैतिक मानदण्डों की उपेक्षा करता हुआ वह स्वच्छन्द प्रेम करता है और तारा को पत्नी बना लेता है।''१९

.....''आज के विषम और संघर्षपूर्ण जीवन में जीने का संघर्ष नितान्त जटिल होता जा रहा है इसके पीछे चाहे कारण सामाजिक व्यवस्था के हों या कुछ और 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' में कमलेश्वर ने इस तरह की परिस्थितियों के कारण संबंधों में परिवर्तन का उद्घाटन किया है।''२०

आगामी अतीत

कमलेश्वरजी का अत्यन्त चर्चित और विवादास्पद उपन्यास है - आगामी अतीत। यह धर्मयुग में धारावाहिक रूप में प्रकाशित भी हो चुका है। कुछ लोगों की दृष्टि से यह अेक रोमानी उपन्यास है और जिन्होंने कथा को सही रूप में पकडा है उनकी दृष्टि में इस उपन्यास की चाँदनी हिन्दी साहित्य का अैसा पहला स्त्री चरित्र है जिसमें कोअी दोहराव नहीं है। उपन्यास पढ़ने पर आप पायेंगे कि कमलेश्वरने अपने इस उपन्यास में रोकांटिकता को रोमांटिकता से ही तोड़ा है। इसके कथ्य में बहुत ही स्पष्ट वर्ग-स्वर मुखरित है। इस उपन्यास पर आधारित ''मौसम'' शीर्षक फिल्म गुलज़ार के निर्देशन में बन गयी है।

यह उपन्यास जब धर्मयुग में धारावाहिक रूप में छप गया तो कमलेश्वरजी को पाठकों के अनेक पत्र मिले। अनेकों आरोप उनके इस उपन्यास पर लगाये

गये। पर कमलेश्वरजी ने अुन्हें सही जवाब भी दे दिअे। 'आगामी अतीत' जब धर्मयुग में धारावाहिक रूप में छप गया, तब अुन्हें असंख्य पाठकोंके पत्र मिले। अुनमें से दो पत्र ये हैं -

"·····आगामी अतीत पढ़ा। पढ़कर काफ़ी निराशा हुअी। अेक बात मैं जानना चाहूँगा कि आप के सामने वह कौन सी आर्थिक, राजनितिक, सामाजिक या कोअी अन्य परिस्थिती थी जिससे प्रेरित होकर आपने अिस घटिया टाअिप के अुपन्यास की रचना कर डाली।" [२१]

- अवतार काम्बोज, देहरादून

"·····और यह जो आपका नया अुपन्यास आगामी अतीत है, अिसे किससे लिखवाया था ! बिलकुल किसी चालू हिन्दी फ़िल्म की कहानी लगती है। तुम्हें हो क्या गया है !" [२२]

- शमा जैदी, बम्बअी।

श्रीमती शमा जैदी और श्री काम्बोज को कमलेश्वरजी ने जो जवाब भिजवाअे थे, अुनके मिले-जुले अंश निम्नांकित हैं -

"·····अफ़सोस सिर्फ अिस बात का है कि तुम जैसी जागरूक दोस्त ने भी बात को नहीं पकड़ा है। मैं ने निहायत फूहड़ ढंगसे रोमांटिकता को रोमांटिकता से ही तोड़ने की कोशिश अिस अुपन्यास में की है और मैं जानना चाहता था कि अिसे पढकर अच्छे अच्छे गच्चा खायेंगे, तुम यह तो देखो कि अुपन्यास की थीम क्या है ! पूंजीवादी समाज में स्पर्धामूलक परिवेश में पड़कर जब आदमी अपने वर्ग को भूलकर दूसरी तरफ लाँघ जाता है और अुस स्पर्धा से अुबरकर जब वह अपनों के लिअे लौटता है, तब तब अुसकी क्या हालत हो चुकी होती है। अिस अुपन्यास के अुपरी रोमैंटिक खोल के भीतर जो कथ्य है, वह है - अिस पूंजीवादी व्यवस्था में स्पर्धा की मजबूरी।" [२३]

'आगामी अतीत' कमलेश्वर का बेहद चर्चित और अत्यन्त विवादास्पद लघु-अुपन्यास है। चांदनी नामक अेक वेश्या के चरित्र को अिसमें सशक्त अभिव्यक्ति मिली है। अुसका चरित्र अत्यन्त सजीव बन पड़ा है। 'आगामी अतीत' वैसे कथोपकथन प्रधान लघु-अुपन्यास है। चाँदनी का चरित्र पाठकों को विशेष प्रभावित करता है। यह लघु-अुपन्यास असफल प्रेम सम्बन्धों की कहानी है। 'आगामी अतीत' जब धर्मयुग में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ, तब अुस पर अनेक आरोप लगाये गये, मगर कमलेश्वर ने अुनके आरोपों का सही रूपसे खंडन भी कर दिया। 'आगामी अतीत' की भूमिका हम जब पढ लेते है, तो यह बात भलीभाँति स्पष्ट हो जाती है, कि अलग अलग प्रकार के आरोप कैसे बेबुनियादी और फ़िजूल हैं।

''.....पूंजीवादी व्यवस्था में अेक गलत ढंग से जो 'सफ़लता' 'काली आँधी' में मालती को मिलती है वही या लगभग अुसी प्रकार की 'सफ़लता' अेक दूसरे गलत रास्ते से 'आगामी अतीत' के कमल बोस को मिलती है। पर अुन दोनों को अिस प्रकार की सफ़लता यों ही मुफ्त में नही मिलती - अुसकी अुन्हें काफ़ी बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है, यानी अुन्हें अपने निकट के लोगों, अपने जाने-पहचाने परिवेश और आत्मीय जनों को सदा के लिअे छोडकर अलग हो जाना पड़ता है।''[२४]

''.... 'आगामी अतीत' अुपन्यास की अेक अन्य विशेषता यह है कि वह हमारे समक्ष चांदनी जैसा जीवंत और जीवर भरा नारी पात्र प्रस्तुत कर सका है। वस्तुतः चांदनी का चरित्र अेक अैसा चरित्र है जो दूसरे किसी भी हिन्दी अुपन्यास में देखने को नहीं मिलता और आश्चर्य अिस बात का है कि कमलेश्वर ने अुसे अपने अभिव्यक्ति कौशल से बिलकुल सजीव रूप में अुपन्यास के पृष्ठों पर खड़ा कर दिया है।''[२५]

''.....कमलेश्वर ने 'आगामी अतीत' अुपन्यास में कस्बे की वेश्याओं की ज़िन्दगी को अत्यन्त सूक्ष्मता अेवं स्वाभाविकता से अंकित किया है। अुनके जीवन में आर्थिक संकट के कारण कितनी कटुता आ गयी है। लेखक ने सहज और यथार्थ चित्रण करके अुनकी दारुण व्यथा तथा दयनीय परिस्थितियों को पाठक के सामने रखा है।''[२६]

टिप्पणियाँ

१) कमलेश्वर - सं· मधुकर सिंह
पृष्ठ - २०२
कमलेश्वर के उपन्यासों की वस्तु चेतना - कृष्ण कुरड़िया

२) हिन्दी लघु उपन्यास - घनश्याम मधुप
पृष्ठ - १६३

३) हिन्दी लघु उपन्यास - घनश्याम मधुप
पृष्ठ - १६३

४) कमलेश्वर - सं· मधुकर सिंह
पृष्ठ - २०५
कमलेश्वर के उपन्यासों की वस्तु चेतना - कृष्ण कुरड़िया

५) कमलेश्वर - सं· मधुकर सिंह
पृष्ठ - १८७
कमलेश्वर की औपन्यासिक यात्रा - डा· वीरेन्द्र सक्सेना

६) हिन्दी लघु-उपन्यास - घनश्याम मधुप
पृष्ठ - १६७

७) कमलेश्वर - सं· मधुकर सिंह
पृष्ठ - २०५
कमलेश्वर के उपन्यासों की वस्तु चेता - कृष्ण कुरड़िया

८) हिन्दी उपन्यास - उद्भव और विकास - डा· सुरेश सिन्हा
पृष्ठ - ५५८

९) हिन्दी लघु-उपन्यास - घनश्याम मधुप
पृष्ठ - १६५·

१०) कमलेश्वर - सं॰ मधुकर सिंह

पृष्ठ - २०८

कमलेश्वर के अुपन्यासों की वस्तु चेतना - कृष्ण कुरड़िया

११) कमलेश्वर - सं॰ मधुकर सिंह

पृष्ठ - २१४

कमलेश्वर के अुपन्यासों की वस्तु चेतना - कृष्ण कुरड़िया

१२) कमलेश्वर - सं॰ मधुकर सिंह

पृष्ठ - १८८

कमलेश्वर की औपन्यासिक यात्रा - डा॰ वीरेन्द्र सक्सेना

१३) कमलेश्वर - सं॰ मधुकर सिंह

पृष्ठ - २०६

कमलेश्वर के अुपन्यासों की वस्तु चेतना - कृष्ण कुरड़िया

१४) हिन्दी लघु अुपन्यास - घनश्याम मधुप

पृष्ठ - १६९

१५) हिन्दी लघु-अुपन्यास - घनश्याम मधुप

पृष्ठ - ११७

१६) समुद्र में खोया हुआ आदमी - कमलेश्वर

यह अुपन्यास - कुछ बातें

पृष्ठ - १

१७) समुद्र में खोया हुआ आदमी - कमलेश्वर

यह अुपन्यास - कुछ बातें

पृष्ठ - १

१८) कमलेश्वर - सं॰ मधुकर सिंह

पृष्ठ - २१५

कमलेश्वर के अुपन्यासों की वस्तु चेतना - कृष्ण कुरड़िया

१९) कमलेश्वर - सं॰ मधुकर सिंह

पृष्ठ - २१३

कमलेश्वर के उपन्यासों की वस्तु चेतना - कृष्ण कुरड़िया

२०) कमलेश्वर - सं॰ मधुकर सिंह

पृष्ठ - २०८

कमलेश्वर के उपन्यासों की वस्तु चेतना - कृष्ण कुरड़िया

२१) आगामी अतीत - कमलेश्वर

पृष्ठ - २

२२) आगामी अतीत - कमलेश्वर

पृष्ठ - २

२३) आगामी अतीत - कमलेश्वर

पृष्ठ - २

२४) कमलेश्वर - सं॰ मधुकर सिंह

पृष्ठ - १९५

कमलेश्वर की औपन्यासिक यात्रा - डा॰ वीरेन्द्र सक्सेना

२५) कमलेश्वर - सं॰ मधुकर सिंह

पृ॰ १९५

कमलेश्वर की औपन्यासिक यात्रा - डा॰ वीरेन्द्र सक्सेना

२६) कमलेश्वर - सं॰ मधुकर सिंह

पृष्ठ - २०२

कमलेश्वर के उपन्यासों की वस्तु चेतना - कृष्ण कुरड़िया

SHIVAJI UNIVERSITY ★ KOLHAPUR (LIBRARY)

पँचम अध्याय

कमलेश्वर के लघु - उपन्यासों के विवेचन का सामान्य आधार

१. कथावस्तु -

२. पात्र और चरित्र-चित्रण -

३. कथोपकथन -

४. वातावरण -

५. भाषा शैली -

६. उद्देश्य -